Sixteenth Loksabha

pan>

Title: Regarding alleged fugitive economic offender.

श्री राजेन्द्र अग्रवाल (मेरठ) : महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया, इसके लिए आपका धन्यवाद ।

भगोड़ा आर्थिक अपराधी मेहुल चौकसी, जो आजकल एण्टीगुआ में छिपा हुआ है, के कांग्रेस से नजदीकी सम्बन्धों की पुष्टि स्वयं चौकसी के वकील ने की है। देश के एक बड़े प्रमुख चैनल पर प्रमुखता से यह समाचार प्रसारित हुआ है। यह बड़ा गंभीर विषय है।

महोदय, हमारी सरकार पहले से कहती आ रही है कि बैंकों को लूटने का काम यूपीए की सरकारों के समय में उनके मंत्रियों के नेतृत्व में होता रहा है। इसका परिणाम यह है कि आज गरीब जनता की दस लाख करोड़ रुपये से भी अधिक एनपीए हो गई है। मेहुल चौकसी के बारे में मैं एक बात और ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि इलाहाबाद बैंक के निदेशक... * ने यह कहा ।

माननीय सभापति: आपको नाम लेने की जरूरत नहीं है।

श्री राजेन्द्र अग्रवाल : महोदय, उन्होंने यह कहा कि जब इनके लोन का विषय इलाहाबाद बैंक के सामने आया तो उन्होंने कहा कि इनको पाँच करोड़ रुपये से अधिक का लोन नहीं दिया जा सकता है। निदेशक को पद से हटना पड़ा । वित्त मंत्रालय का हस्तक्षेप हुआ । यह बात स्वयं निदेशक ने अपने इंटरव्यू में कही है। उसके बाद मनचाहा ऋण उनको प्रदान किया गया । कुल मिलाकर के वित्त मंत्रालय के जो तत्कालीन वित्त मंत्री थे, उनके हस्तक्षेप से यह काम हुआ, इस बात की गवाही स्वयं इलाहाबाद बैंक के निदेशक ने दी थी ।

महोदय, बैंकों को लूटने का यह सिलसिला बहुत पुराना है। वर्ष 1969 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ और वर्ष 1971 के अंदर, केवल दो साल के पश्चात नागरवाला कांड हमारी यादों के अंदर होगा कि वह किस प्रकार से घटा था । उसके अंदर दो लोगों की संदिग्ध परिस्थितियों में हत्या हुई थी, लेकिन उसको दबा दिया गया । उसके अंदर भी पीएमओ का नाम आया था ।

माननीय सभापति : अब आप अपनी बात समाप्त करें ।

श्री राजेन्द्र अग्रवाल : महोदय, तब से यह विषय बराबर चलता आ रहा है। जब-जब यह कांग्रेसी सरकार आई है, तब-तब इस प्रकार की लूट बढ़ती रही है। मैं एक बात आपके माध्यम से सरकार से जानना चाहता हूँ कि तत्कालीन वित्त मंत्री के माध्यम से या उनकी सरपरस्ती के अंदर जो-जो लूट हुई, इसका वास्तविक बॉस कौन था । उस समय के तत्कालीन माननीय प्रधान मंत्री जी तो बिल्कुल नहीं थे । वे तो चुपचाप बैठे हुए इस प्रकार के चौकीदार थे, जो आँख बंद किए रहते थे ।

माननीय सभापति : अब आप अपनी बात समाप्त करें । आपकी बात आ चुकी है।

श्री राजेन्द्र अग्रवाल: मेरा यह कहना है कि सरकार इस बात की जाँच करे कि या तो बॉस मैडम थीं, जिनके तत्कालीन वित्त मंत्री बहुत प्रिय भी थे । इस बात की जाँच की जाए ।

ये जो सारे बैंकों की लूट के प्रकरण हैं, उन्हें सामने लाया जाए, इसके अपराधियों को सामने लाया जाए, यही मेरा निवेदन है। बहुत-बहुत धन्यवाद ।

महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए आपके प्रति बहुत-बहुत आभार ।...(व्यवधान)

माननीय सभापति: कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल, श्री शरद त्रिपाठी और श्री भैरों प्रसाद मिश्र को श्री राजेन्द्र अग्रवाल द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा): सर, किसी एक व्यक्ति का नाम और जो सदन का सदस्य नहीं है, उनके नाम को हटाया जाए ।

माननीय सभापति: हां, उसके बारे में बता दिया गया है। जिनका नाम लिया गया है, उनका नाम रिकॉर्ड में नहीं जाएगा ।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे: सर, हमारे जमाने में जो एन.पी.ए. दो लाख करोड़ रुपये था, अब यह इतने लाख करोड़ रुपये हो गया है।

माननीय सभापति : हां ठीक है, आप बैठ जाइए ।